ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

15 November 2024

ओडिशा के तट से लंबी दूरी की लैंड अटैक क्रूज मिसाइल का सफल परीक्षण

सन्दर्भ: हाल ही में, ओडिशा के चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) से भारत ने अपनी लॉन्ग रेंज लैंड अटैक क्रूज मिसाइल (एलआरएलएसीएम) का पहला सफल उड़ान परीक्षण किया। यह परीक्षण भारत की रक्षा क्षमताओं, विशेष रूप से उसकी मिसाइल प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण प्रगति का परिचायक है।

एलआरएलएसीएम की मुख्य विशेषताएं:

- **रेंज:** इस मिसाइल की मारक क्षमता 1,000 किलोमीटर से अधिक है, जोकि भारत को सामरिक भूमि आधारित लक्ष्यों पर हमला करने की क्षमता प्रदान करती है।
- **उन्नत नेविगेशन:** यह मिसाइल वेपॉइंट नेविगेशन प्रणाली से सुसज्जित है, जोकि लक्ष्य को भेदने में उच्च सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए एक पूर्व-निर्धारित उड़ान पथ का अनुसरण करती है।
- **गतिशीलता:** एलआरएलएसीएम जटिल गतिशीलताओं में सक्षम है, जिसमें ऊंचाई और गति में परिवर्तन शामिल हैं, जिससे इसे रोकना और पहचानना कठिन हो जाता है।
- **प्रक्षेपण लचीलापन:** इस मिसाइल को जमीन आधारित मोबाइल प्लेटफार्मों और नौसैनिक जहाजों दोनों से लॉन्च किया जा सकता है, जिससे इसे युद्ध के विभिन्न क्षेत्रों में रणनीतिक लचीलापन प्राप्त होता है।

विकास और उत्पादन:

- **विकास नेतृत्व:** इस मिसाइल को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के अंतर्गत बेंगलुरू स्थित वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई) द्वारा विकसित किया गया है।
- **सहयोग:** मिसाइल के डिजाइन और परीक्षण में अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं, भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) सहित प्रमुख भारतीय रक्षा उद्योगों का योगदान शामिल हैं।
- **स्वदेशी उत्पादन:** ये भारतीय कंपनियां प्रमुख घटकों के एकीकरण, उत्पादन और आपूर्ति के लिए जिम्मेदार हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि भारत महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर अपनी निर्भरता कम कर सके।

सामरिक महत्व:

- **उन्नत मारक क्षमता:** अपनी लंबी दूरी के साथ, यह मिसाइल भारत को दुश्मन के इलाके में स्थित महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे या सैन्य संपत्तियों को निशाना बनाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण प्रदान करती है।
- **सामरिक प्रतिरोध:** यह मिसाइल भारत की प्रतिरोध क्षमताओं को मजबूत करती है और यह सुनिश्चित करती है कि वह क्षेत्रीय शत्रुओं से संभावित खतरों का प्रभावी ढंग से जवाब दे सके।
- **रक्षा में आत्मनिर्भरता:** एलआरएलएसीएम रक्षा के लिए ष्मेक इन इंडियाष पर भारत की सफलता का प्रमाण है, जोकि घरेलू स्तर पर अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का विकास करने और विदेशी हथियार आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करने की देश की क्षमता को प्रदर्शित करता है।

भू-राजनीतिक और रक्षा निहितार्थ:

- **क्षेत्रीय सुरक्षा:** एलआरएलएसीएम एक विश्वसनीय लंबी दूरी का हमला करने का विकल्प प्रदान करके भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने की क्षमता को बढ़ाती है, जोकि उभरती सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना करने में मदद करता है।
- **वैश्विक स्थिति:** इस मिसाइल के साथ, भारत संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों के विशिष्ट समूह में शामिल हो गया है, जिनके पास उन्नत लंबी दूरी की, सटीक-निर्देशित क्रूज मिसाइलें हैं, जोकि वैश्विक रक्षा गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।
- **सशस्त्र बलों के लिए लचीलापन:** मिसाइल का दोहरा प्रक्षेपण प्लेटफॉर्म (भूमि और समुद्र) इसकी बहुमुखी प्रतिभा को बढ़ाता है, जिससे भारतीय सेना और भारतीय नौसेना दोनों को विभिन्न परिदृश्यों में रणनीतिक लाभ प्राप्त होता है।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) में भारत की पहली पूर्ण महिला बटालियन

संदर्भ: हाल ही में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से, भारत सरकार ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) में पहली बार एक पूर्णत: महिला बटालियन के गठन

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

को मंजूरी दी है।

अखिल महिला रिजर्व बटालियन के बारे में:

- **गठन और नेतृत्व:**
  - » इस बटालियन में 1,025 महिला कार्मिक शामिल होंगी, जिनका चयन सीआईएसएफ के मौजूदा कार्यबल (कुल संख्या लगभग 1.8 लाख) में से किया जाएगा।
  - » बटालियन का नेतृत्व कमांडेंट रैंक के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा किया जाएगा ताकि अन्य सीआईएसएफ इकाइयों के समान अनुशासन और नेतृत्व संरचना सुनिश्चित हो सके।
  - » यह बटालियन सीआईएसएफ की रिजर्व बटालियन संरचना का हिस्सा होगी, जिसका उद्देश्य उच्च सुरक्षा कार्यों और चुनाव जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आयोजनों में सहायता प्रदान करना है।
- **प्रशिक्षण और तैयारी:**
  - » बटालियन का प्रशिक्षण कार्यक्रम गहन और विशिष्ट होगा, जिससे कार्मिकों को वीआईपी सुरक्षा, हवाई अड्डे की सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी अभियानों सहित उच्च जोखिम वाले सुरक्षा कर्तव्यों के लिए तैयार किया जाएगा।
  - » महिला कर्मियों को उत्कृष्ट कमांडो के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि वे अपने पुरुष समकक्षों के समान दक्षता से सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर सकें।
- **नियम और जिम्मेदारियाँ:** बटालियन का मुख्य कार्य उच्च-स्तरीय सुरक्षा अभियानों पर केंद्रित होगा, जिनमें शामिल होंगे:
  - » वीआईपी सुरक्षा और उच्च जोखिम वाले सुरक्षा वातावरण।
  - » हवाई अड्डों, मेट्रो स्टेशनों और परमाणु संयंत्रों व एयरोस्पेस सुविधाओं जैसे संवेदनशील प्रतिष्ठानों की सुरक्षा।

यह कदम महत्वपूर्ण क्यों है?

- **सुरक्षा बलों में महिलाओं को सशक्त बनाना:**
  - » पूर्ण महिला बटालियन के गठन से सीआईएसएफ में लैंगिक असंतुलन को दूर करने में मदद मिलेगी, जहां वर्तमान में कुल कार्मिकों में महिलाओं की संख्या केवल 7% है।
  - » यह पहल अधिक महिलाओं को सीआईएसएफ में शामिल होने और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी भूमिकाएं निभाने के लिए प्रेरित करेगी।
- **लैंगिक समावेशिता को प्रोत्साहित करना:**
  - » महिला बटालियन का गठन सुरक्षा बलों में लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
  - » यह पारंपरिक लैंगिक बाधाओं को तोड़ते हुए महिलाओं की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा की बदलती गतिशीलता को प्रतिबिंबित करना:**
  - » पूर्ण महिला बटालियन का गठन राष्ट्रीय सुरक्षा में महिलाओं की बदलती भूमिका को दर्शाता है, जहां महिलाएं तेजी से अधिक चुनौतीपूर्ण और दृश्यमान भूमिकाएं निभा रही हैं।
  - » यह सुरक्षा अभियानों में महिलाओं की बढ़ती क्षमताओं और नेतृत्व कौशल को पहचानने और स्वीकार करने का संकेत है।

सीआईएसएफ के बारे में:

- **सीआईएसएफ का विकास:**
  - » सीआईएसएफ की स्थापना 1969 में हवाई अड्डों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और एयरोस्पेस सुविधाओं जैसी महत्वपूर्ण अवसंरचना की सुरक्षा के लिए की गई थी।
  - » समय के साथ, बल ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपने आकार और कार्यक्षमता में वृद्धि की है।
- **रिजर्व बटालियनों की भूमिका:**
  - » वर्तमान में सीआईएसएफ 12 रिजर्व बटालियनों का संचालन करता है, जिनमें पुरुष और महिला दोनों कर्मी शामिल हैं। इन बटालियनों को चुनाव सुरक्षा, सरकारी इमारतों की सुरक्षा और बड़े सार्वजनिक आयोजनों में तैनात किया जाता है।
  - » महिला बटालियन एक विशेष इकाई होगी, जो उच्च सुरक्षा अभियानों, वीआईपी सुरक्षा और संवेदनशील राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे की सुरक्षा पर केंद्रित होगी।

भारत की 'अनुकूली रक्षा' (Adaptive Defense) रणनीति

संदर्भ: हाल ही में रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत 'अनुकूली रक्षा' ढांचे का शुभारंभ भारत की रक्षा रणनीति में महत्वपूर्ण विकास है। इस रणनीति का उद्देश्य आधुनिक युद्ध की तीव्रता से परिवर्तित होती प्रकृति से निपटना है, जिसमें उभरती प्रौद्योगिकियों, हाइब्रिड खतरों और जटिल भू-राजनीतिक परिस्थितियों का सामना करना शामिल है।

अनुकूली रक्षा के प्रमुख घटक:

- **भविष्य के खतरों का पूर्वानुमान:**
  - » सक्रिय रक्षा: अतीत की घटनाओं पर प्रतिक्रिया करने की बजाय संभावित खतरों की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करना।
  - » जोखिम मूल्यांकन: उभरते सुरक्षा जोखिमों की पहचान करना और उनके प्रभावी रूप लेने से पहले उनसे निपटने की क्षमता विकसित करना।
- **स्थिति के अनुसार जागरूकता:**
  - » सतत निगरानी: उभरते वैश्विक सुरक्षा रुझानों की जानकारी के लिए उन्नत निगरानी और खुफिया-साझाकरण प्रणालियों का उपयोग।
  - » सामरिक सतर्कता: सुनिश्चित करना कि रक्षा बल बदलते सुरक्षा परिदृश्य का शीघ्रता से आकलन कर सकें और त्वरित प्रतिक्रिया दे सकें।
- **लचीलापन:**
  - » रणनीतिक और सामरिक चपलता: नए या अप्रत्याशित खतरों का शीघ्रता से सामना करने हेतु योजनाओं और अभियानों को अनुकूलित करने की क्षमता।
  - » निर्णय लेना: सैन्य अभियानों के सभी स्तरों पर लचीलापन और त्वरित, सूचित निर्णय लेने पर जोर।
- **तीव्रता:**
  - » रक्षा का निर्माण: ऐसी लचीली रक्षा प्रणालियों का विकास करना जो संकट के दौरान भी सुदृढ़ और क्रियाशील बनी रहें।
  - » प्रतिक्रिया में तीव्रता : यह सुनिश्चित करना कि सेना गतिशील चुनौतियों का शीघ्रता से जवाब दे सके, चाहे वे पारंपरिक हों या अपरंपरागत।

भविष्य की प्रौद्योगिकियों के साथ एकीकरण:

- **अत्याधुनिक तकनीक:** परिचालन क्षमताओं में सुधार के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), साइबर रक्षा, क्वांटम कंप्यूटिंग और ड्रोन जैसी प्रौद्योगिकियों को शामिल किया जाएगा।
- **तकनीक-संचालित युद्ध:** इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग युद्ध में सटीकता, निगरानी और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जाएगा।

आधुनिक युद्ध में अनुकूली रक्षा का महत्व:

- **युद्ध का बदलता स्वरूप:**
  - » **ग्रे जोन और हाइब्रिड युद्ध:** पारंपरिक युद्ध मॉडल की प्रासंगिकता घट रही है, जबकि आतंकवाद, साइबर हमले और सूचना युद्ध जैसे गैर-पारंपरिक और अंतरराष्ट्रीय खतरे महत्वपूर्ण हो गए हैं।
  - » **निरंतर अनुकूलन:** इन उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूली रक्षा को आवश्यक माना जाता है, जो रणनीति और कार्यनीति में सतत विकास की आवश्यकता पर बल देती है।
- **जटिल खतरा परिदृश्य:**
  - » भारत को कई प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें पारंपरिक सीमा-संबंधी संघर्षों के साथ-साथ साइबर युद्ध, आतंकवाद और मनोवैज्ञानिक अभियान भी शामिल हैं।
  - » यह रणनीति इन खतरों के व्यापक स्पेक्ट्रम से समग्र तरीके से निपटने के लिए बनाई गई है।

आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता:

- **'मेक इन इंडिया' पहल:**
  - » **रक्षा में आत्मनिर्भरता:** इसके तहत विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता घटाने और स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों तथा प्लेटफार्मों के उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है।
  - » **प्रमुख परियोजनाएँ:** डीआरडीओ द्वारा विकसित हल्के लड़ाकू विमान 'तेजस', आईएनएस विक्रांत (विमानवाहक पोत) और विभिन्न मिसाइल प्रणालियाँ।
- **रक्षा उत्पादों का निर्यात:**
  - » 2023-24 में भारत का रक्षा निर्यात 10,000 करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और आर्मेनिया जैसे देश प्रमुख गंतव्य होंगे।
  - » सरकार ने 2029 तक 50,000 करोड़ रुपये के रक्षा निर्यात का लक्ष्य रखा है, जोकि भारत की बढ़ती रक्षा विनिर्माण क्षमता को दर्शाता है।

आरबीआई ने एफपीआई को एफडीआई में पुनर्वर्गीकृत करने के लिए रूपरेखा पेश की

सन्दर्भ: हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में बदलने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए एक परिचालन ढांचा प्रस्तुत किया है। यह तब लागू होगा जब एफपीआई भारतीय कंपनियों में

10% की निर्धारित सीमा को पार कर जाता है। यह ढांचा 30 मई 2024 से प्रभावी होगा और यह सेबी के हालिया अद्यतन के अनुरूप है, जो 10% से अधिक एफपीआई होल्डिंग्स को पुनर्वर्गीकृत करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

भारत में एफपीआई निवेश सीमाएँ:

- मौजूदा नियमों के अनुसार, एफपीआई को किसी कंपनी की कुल इक्विटी पूंजी का अधिकतम 10% हिस्सा रखने की अनुमति है।
- यदि एफपीआई इस सीमा को पार कर जाता है, तो उसके पास दो विकल्प होते हैं:
  - **विनिवेश:** 10% की सीमा के भीतर रहने के लिए अतिरिक्त शेयरों को बेचना।
  - **पुनर्वर्गीकरण:** अतिरिक्त हिस्सेदारी को एफडीआई में बदलना, जिसके लिए भारत सरकार और निवेशित कंपनी से अनुमोदन आवश्यक है।

आरबीआई के नए ढांचे की मुख्य विशेषताएँ:

- **पुनर्वर्गीकरण प्रक्रिया:**
  - यदि एफपीआई की हिस्सेदारी 10% से अधिक है, तो एफपीआई को अतिरिक्त शेयरों को एफडीआई के रूप में पुनर्वर्गीकृत करने का विकल्प मिलेगा।
  - पुनर्वर्गीकृत हिस्सेदारी को एफडीआई माना जाएगा, भले ही बाद में हिस्सेदारी 10% से कम हो जाए।
- **पुनर्वर्गीकरण की समयसीमा:**
  - पुनर्वर्गीकरण 10% की सीमा का उल्लंघन होने की तिथि से पांच कारोबारी दिनों के भीतर पूरा करना होगा।
  - इससे एफपीआई के लिए समय पर अनुपालन और स्पष्टता सुनिश्चित होती है।
- **नियामक स्वीकृतियाँ:**
  - पुनर्वर्गीकरण प्रक्रिया के लिए भारत सरकार और निवेशित कंपनी दोनों से मंजूरी प्राप्त करना आवश्यक होगा।
  - पुनर्वर्गीकृत निवेश को मौजूदा एफडीआई मानदंडों के अनुरूप होना चाहिए, जिसमें क्षेत्रीय सीमा, प्रवेश मार्ग और अन्य शर्तें शामिल हैं।
- **संरक्षक की भूमिका:**
  - एफपीआई को अपने कस्टोडियन को पुनर्वर्गीकरण के इरादे के बारे में सूचित करना होगा।
  - कस्टोडियन एफपीआई के निर्दिष्ट डीमैट खाते से प्रतिभूतियों को एफडीआई होल्डिंग्स के लिए विशेष रूप से स्थापित खाते में स्थानांतरित करने में सहायता करेगा।
- **प्रतिबंध वाले क्षेत्र:**
  - उन क्षेत्रों में पुनर्वर्गीकरण की अनुमति नहीं होगी, जहाँ एफडीआई प्रतिबंधित है, जैसे रक्षा, दूरसंचार, और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित क्षेत्र।
  - यह सुनिश्चित करता है कि पुनर्वर्गीकरण देश की एफडीआई नीति के अनुरूप हो और संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी स्वामित्व को रोका जा सके।
- **रिपोर्टिंग और अनुपालन:**
  - विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) का अनुपालन करना होगा और विदेशी मुद्रा प्रबंधन (भुगतान का तरीका और गैर-ऋण उपकरणों की रिपोर्टिंग) विनियम, 2019 के तहत आवश्यक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी।
  - संरक्षक द्वारा अनुपालन की पुष्टि होने के बाद, पुनर्वर्गीकरण प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।

विदेशी निवेशकों के लिए निहितार्थ:

- **उन्नत लचीलापन:**
  - नया ढांचा एफपीआई को 10% से अधिक निवेश को एफडीआई में परिवर्तित करने के लिए अधिक लचीलापन प्रदान करता है।
  - यह रूपांतरण स्वामित्व का स्थायी और रणनीतिक स्वरूप प्रदान करता है, जोकि दीर्घकालिक निवेश लक्ष्यों से मेल खाता है।
- **पारदर्शिता और स्पष्टता:**
  - नया ढांचा पुनर्वर्गीकरण प्रक्रिया में स्पष्टता लाता है, जिससे एफपीआई को विनियामक आवश्यकताओं, समयसीमा और प्रक्रिया में शामिल चरणों को समझने में मदद मिलती है।
- **दीर्घकालिक जुड़ाव:**
  - एफडीआई में पुनर्वर्गीकरण की सुविधा प्रदान करके, यह ढांचा एफपीआई को भारतीय निवेशों को अल्पकालिक स्थिति के बजाय दीर्घकालिक, रणनीतिक प्रतिबद्धताओं के रूप में देखने के लिए प्रेरित करता है।
  - इस बदलाव से विदेशी भागीदारी में वृद्धि और भारतीय कंपनियों के सतत विकास में योगदान मिलने की संभावना है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

15 November 2024

पॉवर पैक्ड न्यूज

प्रधानमंत्री मोदी की विकास पहल

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार की अपनी यात्रा के दौरान 12,100 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया।
- परियोजनाओं में प्रमुख पहल एम्स दरभंगा परियोजना है, जोकि पटना के बाद बिहार में दूसरा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) होगा। इस परियोजना की लागत 1,260 करोड़ रुपये से अधिक है और इसका उद्देश्य क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करना है।
- इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री मोदी ने लगभग 5,070 करोड़ रुपये की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का भी उद्घाटन किया जिसमे सोननगर बाईपास रेलवे लाइन की आधारशिला रखी, जोकि चिरालापोथु को बाघा से जोड़ेगी।
- प्रधानमंत्री ने रेलवे क्षेत्र से संबंधित परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया, झंझारपुर-लौकहा बाजार खंड में नई रेल सेवाएं शुरू कीं।
- इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री ने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र में 4,020 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली पहलों की आधारशिला रखी। इन परियोजनाओं से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने, बुनियादी ढांचे में सुधार होने और राज्य में कनेक्टिविटी में वृद्धि की उम्मीद है।

संकट के बीच हैती का नया नेतृत्व

- एलिक्स डिडियर फिल्स-ऐम ने हैती के नए प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली है। उन्होंने गैरी कोनिले की जगह ली है, जिन्हें संक्रमणकालीन राष्ट्रपति परिषद द्वारा बर्खास्त कर दिया गया था। अप्रैल में गठित इस परिषद को देश में स्थिरता लाने के प्रयास में नए राजनीतिक नेताओं का चयन करने और चुनाव आयोजित करने का काम सौंपा गया था।
- कैरेबियाई देश हैती इस समय गंभीर मानवीय संकट का सामना कर रहा है, जो बढ़ती गैंग हिंसा के कारण और भी गंभीर हो गया है। अकेले 2024 के पहले तीन महीनों में गैंग-संबंधी हिंसा के कारण लगभग 2,500 लोग मारे गए या घायल हुए। सुरक्षा की स्थिति गंभीर बनी हुई है, खासकर राजधानी पोर्ट-ऑ-प्रिंस में, जहां हिंसा ने दैनिक जीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है।

- नए प्रधानमंत्री के रूप में फिल्स-ऐम को इन महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने की कठिन चुनौती का सामना करना पड़ेगा। उनकी प्राथमिक जिम्मेदारियां राष्ट्रीय सुरक्षा में सुधार, गिरोह हिंसा से निपटना और चुनावों के आयोजन की देखरेख करना होंगी।
- हैती की भावी स्थिरता इन संकटों के प्रभावी समाधान पर निर्भर करेगी, जिसके लिए मजबूत नेतृत्व, प्रभावी शासन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होगी।

हैदराबाद में 16वां इंडिया गेम डेवलपर सम्मेलन

- हाल ही में हैदराबाद में 16वां इंडिया गेम डेवलपर कॉन्फ्रेंस (IGDC) शुरू हुआ, जिसमें 20,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। गेम डेवलपर एसोसिएशन ऑफ इंडिया (GDAI) द्वारा आयोजित यह कॉन्फ्रेंस गेमिंग इंडस्ट्री के सबसे महत्वपूर्ण आयोजनों में से एक है।
- सम्मेलन में 150 से अधिक सत्र होंगे और 250 से अधिक वक्ता भाग लेंगे, जिनमें बैटलटेक के निर्माता जॉर्डन वीसमैन और स्टारक्राफ्ट II के निर्माता टिम मोर्टन जैसी उद्योग जगत की प्रमुख हस्तियां शामिल होंगी।

इंडिया गेम डेवलपर कॉन्फ्रेंस (IGDC) के बारे में:

- IGDC पेशेवरों को गेमिंग उद्योग में नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और नवाचारों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह रचनात्मकता और तकनीकी कौशल को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है और भारत के बढ़ते वीडियो गेम क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम बन गया है।
- यह सम्मेलन उद्योग के विकास को समर्थन देने के लिए नीतियों को आकार देने और बुनियादी ढांचे के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com